EXPORT PROMOTION COUNCIL FOR HANDICRAFTS
"EPCH HOUSE" POCKET-6 & 7, SECTOR-C, L.S.C., VASANT KUNJ, NEW DELHI-110070
Tel: 91-11-26135256 Email: mails@epch.com
Fax: 91-11-26135518, 26135519 Web: www.epch.in

PRESS RELEASE

TWO DAYS INTERNATIONAL SEMINAR ON PROMOTION OF INDIAN HANDICRAFTS AND INTERNATIONAL CRAFT EXCHANGE PROGRAMME

New Delhi – September 11, 2013 -- The Export Promotion Council for Handicrafts (EPCH) and National Centre for Design & Product Development (NCDPD) for the first time are organizing a two-day event titled **International Seminar on Promotion of Indian Handicrafts and International Craft Exchange Programme from 17-18 September, 2013 at The Ashoka Hotel, New Delhi.**

As the name indicates the event has two components viz. a seminar under which experts from Vietnam, Thailand, China, Japan and Ireland will make a special presentation before the Indian handicrafts exporting community on various aspects of promoting exports. The other component will be International Craft Exchange Programme in which Craftspersons from China, Thailand, Vietnam and India will actively participate make demonstration of their craft capabilities ultimately enabling close interaction between craftspersons of those countries on the technique and methods adopted for production, design, design development, packaging and linkages for marketing both domestically and internationally, said Mr. Rakesh Kumar, Executive Director of EPCH.

Handicrafts exports from India occupy a special place in the Indian economy and social life. Exports have been growing on a steady annual average rate of 15% per annum during the last few decades. In the recently concluded financial year, exports of handicrafts from India to world over amounted to Rs.17970.12 crores. Despite the fact that Indian exports have been rising year after year, India's share in the world market has been less than 2%. Handicrafts production in India is estimated to be of the order of US $ 5600 million out of which exports amount to US $ 3304 million. The balance production of handicrafts averaging around US $ 2300 million is estimated to be domestically consumed. This figure indicates that there is surplus available

in the country for exports. India also has hidden treasure of raw material base which can be converted into handicrafts in future depending on the requirement. With the availability of this kind of surplus, it is necessary for India to try and increase its share in the world market.

According to Mr. Rakesh Kumar, China has taken the lead in the handicrafts exports in the world market. Its share is estimated to be around 30% of the world market. Other Asian countries like Thailand, Vietnam, Indonesia, Philippines etc. are also having substantial share in the world market. Handicrafts production in most of these countries is mechanized and is based on production clusters which have been developed on the basis of focus products for focused markets. The situation in India is different, in India handicrafts is still handcrafted and machines are used for finishing purposes. Production cluster are based on availability of local raw material and local craftsmanship and skills.

The EPCH in collaboration with NCDPD and Development Commissioner (Handicrafts) have, therefore, planned this International Seminar and Craft Exchange Programme to learn from the experience of the countries who have obtained a leading position in the world market. The craft Exchange Programme will have

craftspersons from China, Thailand and Vietnam besides India. The International Seminar will have eminent experts speakers from Japan, Ireland, Vietnam, Thailand, China besides Indian experts. These experts will unfold their case studies and experiences in promotion of handicrafts, said Executive Director, EPCH.

The two days Seminar and Craft Exchange Programme scheduled to be held from 17-18 September, 2013 at The Ashoka Hotel, New Delhi is expected to enable Indian handicrafts exporting community to re-orient itself to take a lead in the world market. The seminar will be inaugurated by Union Minister of Textiles, Dr. K.S. Rao.

For further information, please contact :

Mr. Rakesh Kumar, Executive Director – EPCH - +91-9818272171

प्रेस रिलीज

भारतीय हस्तशिल्प और अंतरराष्ट्रीय शिल्प कला विनिमय कार्यक्रम पर दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार

नई दिल्ली – सितंबर 11, 2013 -- हस्तशिल्प निर्यात संवर्धन परिषद (ईपीसीएच) और राष्ट्रीय डिजाइन और उत्पाद विकास केंद्र (एनसीडीपीडी) पहली बार **भारतीय हस्तशिल्प और अंतरराष्ट्रीय शिल्प कला विनिमय कार्यक्रम पर दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार** का आयोजन कर रहा है. इसका आयोजन **नई दिल्ली के द अशोका होटल में 17-18 सितंबर 2013** को किया जा रहा है.

जैसा कि नाम से ही पता चल रहा है, इस कार्यक्रम में दो घटक मौजूद हैं. जिनमें पहला है सेमिनार. जिसके तहत वियतनाम, थाईलैंड, चीन, जापान और आयरलैंड भारतीय हस्तशिल्प निर्यात समुदाय के समक्ष निर्यात को बढ़ावा देने के विभिन्न पहलूओं से जुड़ी एक खास प्रस्तुति देंगे. दूसरा घटक है अंतरराष्ट्रीय शिल्प विनिमय कार्यक्रम जिसके तहत चीन, थाईलैंड, वियतनाम और भारत के शिल्पी न सिर्फ सक्रिय रूप से भाग लेंगे अपितु अपने शिल्प कला का जोरदार प्रदर्शन भी करेंगे. हस्तशिल्प निर्यात संवर्धन परिषद के कार्यकारी निदेशक (एग्जिक्यूटिव डायरेक्टर) श्री राकेश कुमार ने बताया कि इस दौरान इन देशों के शिल्पियों को उत्पाद, डिजाइन, डिजाइन के विकास, पैकेजिंग और संयोजन की तकनीक और प्रणाली पर बातचीत के जरिए समीप आने का एक बेहतर मौका मिलेगा.

भारतीय अर्थव्यवस्था और यहां के सामाजिक जीवन में हस्तशिल्प निर्यात एक अहम स्थान रखता है. पिछले कुछ दशक से सालाना निर्यात लगभग 15 फीसदी की दर से लगातार बढ़ रहा है. हाल ही में समाप्त हुए वित्तीय वर्ष के दौरान भारत से 17970.12 करोड़ रुपये का हस्तशिल्प निर्यात किया गया. इस तथ्य के बावजूद कि भारतीय निर्यात साल दर साल बढ़ रहा है, विश्व निर्यात बाजार में अब भी भारतीय निर्यात की हिस्सेदारी केवल 2 फीसद ही है. भारत में करीब 5600 मिलियन डॉलर का हस्तशिल्प उत्पादन का कारोबार है. इसमें से 3304 मिलियन डॉलर का उत्पाद निर्यात किया जाता है. जबकि बचा हुआ करीब 2300 मिलियन डॉलर का उत्पाद घरेलू बाजारों में खपत हो जाता है. यह आंकड़ा निर्यात के लिए देश में अतिरिक्त उपलब्धता को दर्शाता है. भारत में कच्चे माल का छिपा खजाना मौजूद है जिसे आवश्यकता के अनुसार भविष्य में हस्तशिल्प के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है. मौजूदा अतिरिक्त उपलब्धता को देखते हुए यह अत्यावश्यक है कि भारत को विश्व बाजार में अपनी हिस्सेदारी को बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए.

श्री राकेश कुमार के मुताबिक हस्तशिल्प निर्यात के मामले में चीन विश्व में पहले नंबर पर आ गया है. विश्व बाजार में इसकी हिस्सेदारी लगभग 30 फीसदी हो गई है. दूसरे एशियाई देश जैसे थाईलैंड, वियतनाम, इंडोनेशिया, फिलिपींस आदि का भी विश्व बाजार में बड़ा हिस्सा है. इनमें से अधिकांश देशों में हस्तशिल्प उत्पादन बाजार को ध्यान में रखते हुए यांत्रिक रूप से किया जाता है. भारत में हालात अलग हैं. यहां अभी भी

हस्तशिल्प का उत्पादन हाथों से ही किया जाता है और केवल फिनिशिंग के लिए ही मशीन का इस्तेमाल किया जाता है. यहां उत्पाद समूह स्थानीय कच्चे माल, शिल्पी और कौशल की उपलब्धता पर पूरी तरह से निर्भर हैं.

इसलिए ईपीसीएच ने एनसीडीपीडी और विकास आयुक्त (हस्तशिल्प) के सहयोग से इस अंतरराष्ट्रीय सेमिनार और शिल्प विनिमय कार्यक्रम की योजना बनाई जिसके माध्यम से विश्व बाजार में अग्रणी स्थान रखने वाले देशों के अनुभव से सीखने का मौका मिले. इस शिल्प विनिमय कार्यक्रम में भारत के अलावा चीन, थाईलैंड और वियनताम के शिल्पी मौजूद रहेंगे. अंतरराष्ट्रीय सेमिनार को भारत के अलावा जापान, आयरलैंड, वियतनाम, थाईलैंड और चीन के प्रख्यात वक्ता संबोधित करेंगे. ईपीसीएच के कार्यकारी निदेशक श्री राकेश कुमार ने बताया कि इस दौरान ये विशेषज्ञ हस्तशिल्प संवर्धन से जुड़े अपने अध्ययन और अनुभव को बांटेंगे..

उम्मीद की जा रही है कि 17-18 सितंबर, 2013 को नई दिल्ली के द अशोका होटल में आयोजित दो दिवसीय शिल्प विनिमय कार्यक्रम भारतीय हस्तशिल्प निर्यात समुदाय को दुनिया के बाजार में आगे बढ़ाने की नई दिशा प्रदान करेगा. इस सेमिनार का उद्घाटन माननीय कपड़ा मंत्री डॉक्टर के एस राव करेंगे.

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:

श्री राकेश कुमार, कार्यकारी निदेशक, हस्तशिल्प निर्यात संवर्धन परिषद - +91-9818272171